BA Part-II

History Notes

By- Dr. Durga Bhawani

Scanned with CamScanner

Q. फ्रांस की क्रांति शुरू होने में दार्शनिकों की क्या भूमिका थी?

Ans— नेपोलियन ने एक बार कहा था कि — यदि रूसो ना होता तो फ्रांस में क्रांति भी नहीं होती। वास्तव में यदि रूसो ना होता तो फ्रांस की क्रांति भी इतनी महान नहीं होती और अन्य देशों की क्रांति की तरह ही उसका रूप अत्यन्त सूक्ष्म होता। राष्ट्र को जागृत करने में दार्शनिकों का बहुत बड़ा हाथ था। इन्हों ने मध्यम एवं जनसाधारण को जागृत करने एवं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक किया। तत्कालीन फ्रांसीसी जनता को सुविधा के लिए दो वर्गों में बाँट सकते हैं।

① कुलीन वर्ग - जिन्हें अनेक विशेष सुविधाएँ प्राप्त थीं।
② साधारण वर्ग - जिन्हें हर सुविधाओं से वंचित रखा गया था।

इन दोनों वर्गों में इतनी असमानता थी कि दोनों में किसी प्रकार का समन्वय होना असम्भव था। दिन-प्रति-दिन दोनों के बीच कटुता बढ़ती जा रही थी।

18वीं शताब्दी में यूरोप के इतिहास में अनेक दार्शनिक हुए जिन्हों ने राज्य, चर्च एवं सामंतों के विशेषाधिकारों की आलोचना की। इन दार्शनिकों के अनुसार किसी भी संस्था को इसलिए महत्व नहीं दिया जा सकता कि वह बहुत पुरानी है बल्कि उसकी महत्ता का अनुमान उसकी उपयोगिता से लगाना चाहिए। इन दार्शनिकों के अनुसार किसी भी बात को ग्रहण करने पहले उसे तर्क की कसौटी पर कस लेना चाहिए। दार्शनिकों ने अपने लेखों और भाषणों के द्वारा जनता के विचारों में आमूल परिवर्तन कर दिया। इस प्रकार फ्रांस में राजनीतिक क्रांति से पूर्व एक बौद्धिक क्रांति हो गयी थी। इस बौद्धिक क्रांति के जन्म दाताओं में निम्नलिखित दार्शनिकों के नाम उल्लेखनीय हैं।

मांटेस्क्यू (1689–1755) — इन्हें फ्रांसीसी दार्शनिकों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। मांटेस्क्यू पेशे से वकील था और राजसत्ता का पोषक था, क्रांतिकारी नहीं

कर दैवीय मत का अनुयायी था परन्तु उसने राजा के दैवी होने का और चर्च का विरोध किया। वह राजा को इतिहास की उपज बताता था और इंगलैंड के वैधानिक शासन का प्रशंसक था। वह स्वयं को जनता की स्वतंत्रता का पोषक समझता था। उसका मुख्य सिद्धांत शक्ति प्रकरण था। उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "The spirit of the Law" में सरकार के मुख्य तीन अंग बताए तथा इन तीनों अंगों — व्यवस्थापिका, कार्यपालिका तथा न्याय पालिका की प्राथमिकता पर जोर दिया। उसका कहना था कि - सरकार को व्यवस्थित करने तथा उसका कार्य सुचारु रूप से चलाने के लिए अत्यंत आवश्यक है कि इन तीनों अंगों को एक ही व्यक्ति के हाथों ना सौंप कर, अलग-अलग व्यक्तियों को इसका संचालक बनाया जाए अर्थात कानून बनाने वाली संस्था अलग हो, कानून पर अमल करने वाले कोई और हो तथा न्याय विभाग इन दोनों से अलग हो।

रूसो — क्रांतिकारी विचारकों में रूसो का स्थान अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। उसने विचारों तथा कार्य-कलापों से मांटेस्क्यू तथा वाल्तेयर से भी अधिक ख्याति प्राप्त कर ली थी। रूसो का जन्म जेनेवा के एक घड़ी साज के यहाँ हुआ था। उसकी आरंभिक शिक्षा नियमित रूप से नहीं हो पाई थी फिर भी रूसो उच्च कोटि का विचारक क्रांतिकारी था। मांटेस्क्यू ने तो केवल राजाओं की स्वेच्छाचारिता की निंदा की थी, वहीं वाल्तेयर ने चर्च समाज तथा शासन प्रबंध की आलोचना करते हुए उसकी बुराईयों का प्रचार किया किन्तु रूसो ने सामाजिक पुनर्व्यवस्था के लिए जनता के सम्मुख एक नई योजना प्रस्तुत की। उसने यह भी घोषणा की कि - समाज में सभी मनुष्य समान हैं और राजसत्ता का सभी अधिकार प्रजा में निहित होना चाहिए।

इसके अतिरिक्त रूसो ने स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व की भावना का भी उद्घोष किया तथा अपनी पुस्तक में इनके महत्व को भी समझाया। परिणामस्वरूप जनता में रूसो की इस विचारधारा ने क्रांति की पृष्ठभूमि तैयार कर दी। लोग क्रांति के समय रूसो को अपना गुरु मानने लगे। क्रांति के समय रूसो के अनुयायियों ने और विशेष रोबसपियर ने रूसो के सिद्धांतों, स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, जनता का शासन में अधिकार, राजा की निरंकुशता का अंत, गणतंत्र की स्थापना, कुलीन तथा पादरी वर्ग के विशेषाधिकारों की समाप्ति को क्रियात्मक रूप में परिणत करने का विशेष प्रयत्न किया। रूसो को क्रांति का सूत्रधार कहा जाता है क्योंकि उसने एक ठोस कार्यक्रम जनता के सम्मुख रखा और जिसे कार्य रूप देकर जनता ने क्रांति को सार्थक बनाया।

वाल्तेयर — वाल्तेयर का जन्म फ्रांस के एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। वह चर्च का विरोधी था और प्रायः उच्च पादरियों के भ्रष्ट एवं विलासी जीवन पर व्यंग्यात्मक तथा निंदात्मक लेखों द्वारा कुठाराघात करता रहता था। उसके लेखों में राजा की निरंकुशता को निंदनीय बना दिया। वह व्यक्तिगत स्वतंत्रता के लिए ~~[illegible]~~ अगाढ़ प्रेम उसके इस बात से भली भाँति जाना जा सकता है — "यद्यपि मैं आपके इस बात से सहमत नहीं हूँ परन्तु आपके इस बात को कहने के अधिकार की रक्षा के लिए मैं अपने प्राण तक अर्पित कर सकता हूँ।"

उसने सभी प्रकार के शोषण, अत्याचार तथा अंधविश्वास का घोर विरोध किया और तीक्ष्ण वाक् प्रहारों से जनता के हृदय से राज्य, ~~[illegible]~~ चर्च और अधिकारियों का आतंक दूर किया। उसे यूरोपीय साहित्य का सम्राट कहा जाता है। उसके कटु लेखों और भाषणों के परिणामस्वरूप उस समय का समाज स्वयं अपने आप से घृणा करने लगा था। उसके कटु लेखों से घबराकर फ्रांस की तत्कालीन सरकार ने उसे देश से निकाल दिया फिर भी वह 18वीं के यूरोप का सर्वाधिक सम्मानित व्यक्ति था।

दिदरो - यह भी क्रांतिकारी विचारों का पोषक था। दिदरो ने अपने समकालीन अनेक विद्वानों एवं दार्शनिकों का सहयोग प्राप्त करके एक विशाल विश्वकोष की रचना की थी। इससे उसका अभिप्राय तत्कालीन जनता को उस समय के सम्पूर्ण ज्ञान से परिचित करना था। अपने इस ग्रंथ में उसने एकतंत्र राजसत्ता, राजाओं की स्वेच्छाचारिता, निरंकुशता, धार्मिक सहिष्णुता, चर्च तथा उसके अधिकार, सामंत पद्धति, समाज में वर्गों का विभाजन, टैक्स और उसका बोझ, फौजदारी कानून पद्धति, शासन की भ्रष्टता तथा दान-प्रथा आदि भी जानने योग्य बातें थीं, सभी की विशेष व्याख्या की थी। इस विश्वकोष को प्रकाशित करने में दिदरो को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा किन्तु फिर भी अन्त में वह अपने प्रयोग में सफल हुआ और विश्वकोष प्रकाशित हो गया। इस विश्वकोष ने फ्रांसीसी क्रांति की भावना को प्रोत्साहन देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

उपर्युक्त विवरण से स्पष्ट है कि फ्रांसीसी क्रांति के प्रचार-प्रसार में फ्रांसीसी विचारकों, दार्शनिकों, अर्थशास्त्रीयों एवं लेखकों का बहुत बड़ा हाथ था।

परन्तु यह समझ लेना कि क्रांति का विस्फोट हुआ ही उन लेखकों और दार्शनिकों के विचारों के कारण और वे ही इस विस्फोट के प्रमुख कारण थे, तो ये भारी भूल और वास्तविकता से दूर की बात है अर्थात बात तो यह है कि फ्रांस के शासन में विद्यमान अनेक प्रकार दोषों, उच्च पादरी वर्ग द्वारा की धर्मभीरु जनता के शोषण और सामाजिक असमानता के कारण जनता को असहनीय कष्ट उठाने पड़े थे अतः क्रांति का होना अवश्यम्भावी था। विचारकों एवं दार्शनिकों ने क्रांति को अपने उग्र विचारों द्वारा निकट ला दिया। इस प्रकार कहा जा सकता है कि - "फ्रांस के दार्शनिकों एवं विचारकों का इस राज्यक्रांति में महत्वपूर्ण योगदान था और वे क्रांति के संस्थापक थे" यह कथन सर्वथा सत्य है।